ST. LAWRENCE HIGH SCHOOL

A JESUIT CHRISTIAN MINORITY INSTITUTION

CLASS: 5

SUBJECT :STUDY MATERIAL HINDI LITERATURE

DATE : 04.05.20

पाठ -जग के उस निर्माता को हम

कवि -द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी

कविता "जग के उस निर्माता को हम " कवि द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी (१९१६-१९९८) द्वारा रचित है। बच्चो के कवि सम्मलेन का प्रारम्भ करने वालों के रूप में उनका योगदान एक अलग स्थान रखता है। शिक्षा के प्रचार और प्रसार में उन्होंने अनथक प्रयास किये थे। भारतीय और विदेशी छात्रों को हिंदी भाषा और साहित्य का ज्ञान दिलाने में इनका योगदान हमेशा याद किया जाएगा। उनके कुछ प्रमुख रचनाओं के नाम हैं : दीपक , गीत गंगा , सूरज सा चमकू मैं , हाथी घोडा पालकी आदि। “जग के इस निर्माता को हम " नामक इस कविता के माध्यम से कवि ने कहा है कि प्रकृति के सभी तत्व और प्राणी ईश्वर की महिमा का बखान करते रहते हैं ,कवि उस ईश्वर को शीश झुका कर धन्यवाद करते हैं I

<u>छंदों की व्याख्या</u> :

1.संध्या होते ..... जाता है

उपर्युक्त पंक्तियों में कवि ने यह समझाया है कि ईश्वर ने प्रकृति को अत्यंत सुन्दर बनाया है। वे कहते हैं कि वह ईश्वर ही हैं जो शाम होते ही इस प्यारी सी धरती पर सूरज के रूप में लालिमा तथा उसकी चमक मोतियों की भाँती बिखराते हैं और उन्ही की कृपा से प्रातः होते ही सूरज की सुनहरी किरण चारों ओर फ़ैल कर धरती की प्राकृतिक सौन्दर्य को और भी बढ़ा देती है।

2.जिसके शशि की .....सा - दमकातीं

उपर्युक्त पंक्तियों में कवि कहते हैं कि जिस ईश्वर ने अपने चाँद की किरणों से धरती के कोने - कोने को चमकाया है और सूरज की सुनहरी किरण धरती पर छोटे से छोटे तिनके को सोने सा दमकाया है ,उस ईश्वर को अपना आभार व्यक्त करते नहीं थकते अर्थात चाँद और तारे भी ईश्वर को अपना धन्यवाद व्यक्त करते हैं।

3.नील गगन में .....धरा बरसाते

उपर्युक्त पंक्तियों में कवि कहते हैं कि ऊपर सुन्दर से नीले आसमान पर जब घनघोर बादल छा जाते हैं और सूखी प्यासी धरती पर जब अपनी जल की धारा बरसाते हैं तो कवि को ऐसा प्रतीत होता है मानो उस नीले आसमान के साथ साथ सभी घने बादल और वह जल की धाराएं ईश्वर के सामने नत मस्तक हो अपने कृतज्ञता व्यक्त कर रहे हो। उसी प्रकार इस अत्यंत सुन्दर धरती को बनाने के लिए हमे भी भगवान् का धन्यवाद करना चाहिए।

4.गूँज रही .....मृदु -स्वर में।

उपर्युक्त पंक्तियों में इस संसार में सभी पहाड़ियों तथा घाटियों के बीच जिसकी आवाज़ गूंजती है वह एकमात्र ईश्वर की ही आवाज़ है। धरती के सभी झरनों की झर -झर सी आवाजें तथा नदियाँ जिसका गुण गान अपने कल -कल छल -छल के मधुर स्वर से करती हैं तथा ईश्वर की कृपा के लिए अपना शुक्रिया व्यक्त करती हैं ,कवि भी उसी ईश्वर के सामने अपना सिर झुकाकर नमस्कार करते हैं I

5.डाल -डाल ..... सदा लुटाते।

इन पंक्तियों के माध्यम से कवि कहते हैं कि भगवान की महिमा का ज्ञान पक्षियों , फूलों तथा पेड़ पौधों से भी अछूता नहीं है। डाल -डाल पर बैठ कर पक्षियों का झुण्ड भी भगवान् का गान गाते नहीं थकता। सभी वनों तथा बगीचों में ईश्वर की महानता तथा उनका गुणगान सभी प्रकार के फूल तथा उनकी मनमोहक खुशबुएँ चारों ओर बिखेरती रहती हैं।

6 .जग के .....शीश झुकाते।

इन पंक्तियों के माध्यम से कवि हमसे कहते हैं कि उस असीम अनंत महान ईश्वर को हम सब मिलकर शीश झुकाते हैं और धन्यवाद करते हैं।

<u>लघु प्रश्न -उत्तर</u>

1."जग के उस निर्माता को हम " नामक कविता के कवि कौन हैं ,उनके बारे में कुछ लिखे ?
कविता "जग के उस निर्माता को हम " कवि द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी (१९१६-१९९८) द्वारा रचित है। बच्चो के कवि सम्मलेन का प्रारम्भ करने वालों के रूप में उनका योगदान एक अलग स्थान रखता है। शिक्षा के प्रचार और प्रसार में उन्होंने अनथक प्रयास किये थे। भारतीय और विदेशी छात्रों को हिंदी भाषा और साहित्य का ज्ञान दिलाने में इनका योगदान हमेशा याद किया जाएगा। उनके कुछ प्रमुख रचनाओं के नाम हैं : दीपक , गीत गंगा , सूरज सा चमकू मैं , हाथी घोडा पालकी आदि।
"जग के इस निर्माता को हम " नामक इस कविता के माध्यम से कवि ने कहा है कि प्रकृति के सभी तत्व और प्राणी ईश्वर की महिमा का बखान करते रहते हैं ,कवि उस ईश्वर को शीश झुका कर धन्यवाद करते हैं I

2.कविता में कवि ईश्वर को किस बात का धन्यवाद देते हैं ?
कविता में कवि ने धरती के प्राकृतिक सौन्दर्य तथा प्रकृति के सभी तत्वों और प्राणियों के माध्यम से भगवान् की असीम कृपा का धन्यवाद दिया है। साथ ही कवि उस सर्वदाता ईश्वर झुकाने के लिए कह रहे।

3.नदियाँ जग के निर्माता का यशगान किस प्रकार करती हैं ?
नदियाँ जग के निर्माता का यश गान अपने कल-कल छल -छल के मधुर स्वर से करती है।

4.कविता में जग का निर्माता किसे कहा गया है और क्यों ?
कविता में जग का निर्माता ईश्वर को कहा गया है क्योंकि ईश्वर ने ही हमारी इस सुन्दर धरती की रचना की है। उस ईश्वर ने मनुष्य ,पशु-पक्षियों ,पेड़-पौधे , फूल -पत्तियों ,सागर सरोवर -सरिता और भी न जाने क्या क्या बनाया है। ईश्वर द्वारा रचे हुए हर वास्तु का इस संसार में अपना एक विशिष्ट गुण है।

5.आसमान में सुन्दर मोती कौन बिखरा ता है ? कविता की कौन सी पंक्तियाँ हमे यह बताती हैं ?
आसमान में सुन्दर मोती सूरज भिखेरता है अर्थात वह ईश्वर ही हैं जो सूरज के रूप में हमारी इस धरती को सुबह शाम प्रकाशित करते हैं , वह पंक्तियाँ इस प्रकार है :संध्या होते ही जो नभ पर सुन्दर मोती बिखरता है , और प्रातः होते ही भू पर जो आ उन्हें लुटा जाता है।

<u>शब्द -अर्थ</u>

संध्या :शाम का वक्त

प्रातः : सुबह का समय

गगन : आसमान

शीश : सर

शीतल : ठंडा

- MANISHA YADAV